

लोहं राड वूं श्रीं जिं इवें हं राड लोमायां नां अं अं ३॥ क नाग न्यासं राड
द नू अस्मा व द्वा ड नागम शुक्रं व द्वा २ म डी वें हं रु ग स्वाहा ॥ अं
न्यास ॥ ड हं मित्रम ॥ ड हं ड हं ड हं ड हं ड हं ड हं ड हं ड हं ड हं ड हं
ड हं ड हं मित्रानियासं ॥ ड हं नागम द्वाया वें न्यास ॥ ड हं म स्वरा ड हं
कं थं ॥ ड हं नूग व स ॥ ड हं ग द्वा स ॥ ड हं गु द्वा स ॥ ड हं पा

II-115

धमरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

श्रीसांख्येष्टमिवायां ॥ ३० ॥ तिकायाप्रधिष्ठान ॥ ३० ॥ स्वाहा
 वज्र ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥ न स्वाहा ॥ ३० ॥ ना स्वाहा ॥ ३० ॥
 ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥
 नमो ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥
 नमो ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥
 नमो ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥

३०

२

यथा ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥
 यथा ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥
 यथा ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥
 यथा ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥
 यथा ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥ स्वाहा ॥ ३० ॥

३०

ल्य के प्रये भिना कययत्ना गपु वनार्ति गद्य दल्ला वनूनना गवाऊ
सयनिवा नाई द्वा कययत्न ॥ अकर्म द्वा ॥ डं वजा के गऊ ॥ डं वजा ग
हं ॥ डं वजा ह्वाट वं ॥ डं वजा व म हा ॥ अर्धमाचमन ॥ य वन स ल्का ना
यथा वनूधना गवाऊ य सयनिवा ना यथा दाधी चमनया कुर्ये
निद्रु स्वाहा ॥ ययय ॥ ॥ डं वजा ॥ व वना ह्वा व वजा वनूधनय

वजययययनिद्रु स्वाहा ॥ डं वजा ॥ अ वं वी जा ह्वा वनूधनय वजययय
यनी ह्वा स्वाहा ॥ डं वजा ॥ व वनूधना गवाऊ य वजययययनी ह्वा
हा ॥ मया ॥ डं वं वासुकी ना गवाऊ य वजययययनी ह्वा स्वाहा ॥ पूर्व
डं वं वं वका य वजययययनिद्रु स्वाहा ॥ व व ॥ डं वं व व व
ना गवाऊ य वजययययनिद्रु स्वाहा ॥ वाचि म ॥ डं वयं वना

गना जाय वज्र पूर्य युति छु स्वाहा ॥ ~~उरु~~ ॥ डं हं हं हं हं नो गवाज
 यय वज्र पूर्य युति छु स्वाहा ॥ ~~मू~~ ॥ डं मं हं मं य मं ता मं ना जाय वज्र
 पूर्य युति छु स्वाहा ॥ ~~न~~ ॥ डं कं कं कं कं कं ना गवा जाय वज्र पूर्य
 पूर्य युति छु स्वाहा ॥ ~~वा~~ ॥ डं मं गं हं वं पाले ना गवा जाय वज्र
 पूर्य युति छु स्वाहा ॥ ~~पू~~ ॥ डं मं गं प मं द ला द दि वा र्छ पट ॥ डं मं

पर्व सी हं अनं

४

गज न ना गवा जाय वज्र पूर्य युति छु स्वाहा ॥ यय वज्र ना गवा यति
 काया ॥ ~~म~~ ॥ डं चं चं चं चं चं ना गवा जाय वज्र पूर्य युति छु स्वाहा ॥
 दक्षिण ॥ डं वं वं ना गवा य वज्र पूर्य युति छु स्वाहा ॥ दक्षिण ॥
 डं स स स स स ना गवा जाय वज्र पूर्य युति छु स्वाहा ॥ वायव्य
 डं मं मं मं मं मं ना गवा जाय वज्र पूर्य युति छु स्वाहा ॥ वायव्य

जा ३

हृत्स्वादा ॥ ने अखे ॥ उं संस मूय नाग राजा वज्रयुथयुति हृत्
स्वादा न वायु व ॥ उं वं वं दन नाग राजा वज्रयुथयुति हृत्
दा ॥ ॐ ॥ य वं य द य ज्ञा लो ह्या य वं ॥ स्मृति ग व ति म
नाग वं व म वं ल वं न वं य वं ल य वं व ज्ञ ल य वं य ज्ञ
ला म य नं ॥ स वं स द ग क ग य वं व वं व वं व वं व वं व वं

६

हृत्स्वादा ॥ ने अखे ॥ उं संस मूय नाग राजा वज्रयुथयुति हृत्
स्वादा न वायु व ॥ उं वं वं दन नाग राजा वज्रयुथयुति हृत्
दा ॥ ॐ ॥ य वं य द य ज्ञा लो ह्या य वं ॥ स्मृति ग व ति म
नाग वं व म वं ल वं न वं य वं ल य वं व ज्ञ ल य वं य ज्ञ
ला म य नं ॥ स वं स द ग क ग य वं व वं व वं व वं व वं व वं

वृद्धवृद्धसुगणवृद्धकूलययकोरनो मययद्विसलसगुकात्रि
युध्यतस्तवरा वमनयौ दादसुदाचदुधा वा धीमदागुधानि
अयनिनामयामि ॥ अवाधितंद्रगवत्र मत्रनययामि ॥ यश्च
स्तनिकवंकन द्वादचिगं धर्मविगुद्धि मूनयानमिदं सुमगं
संघी ननात्मज गगगुधिर्नमदागं ॥ नियामिनिहर्तुं नि
कथा

दमदमग वृद्धायसात्मज गनाय द्वात्म कायसर्वात्मनारिम
तवस्तुनियो ज नाथय गत्व कं राहु मदमवयनीगदाय अ
दावताणनच नासनरु गालरुय वाधि जगदधिसिद्धयामन
रुवाधियदमदार्थदममासुगयासवस्तु कृपानक ॥ ०
गगनसमाधिमुदा रावना राधगा धीयुसर्वसंघ दाय

मयं चित्तमालम्ब्य वेगिच्छन्नाधिमदासक्तप्रयत्नयूतधामत ॥ यं
कालेन वायुवन्वाहनीलध्वजादिगते इयानि न कालमोक्षे
गोक्षान्नयकप्रहादिकेन ॥ त इयानि च कायधामयवदुल्लङ्घ्यतद्यध
दिकेन ॥ त इयानि लोकावधारयथीचतुर्भुजसंयुक्तकवलिगचिकवज्र
दिकेन ॥ त इयानि सौकायनसम्भूतचतुर्भुजतमयमह्यज्जय

[illegible]

गवर्धन मन्त्रास्य सकल रुद्राद्यादिनां मुखं स बाह्वी वज्रध्वजं व
 वामं कनना गायाम वज्ररुद्राद्यालिनिग ४॥ वामसंघालिनि
 लविचित्रसंघालिनि वज्रमोक्षोत्सादिनां ११ ॥ ततः ४ यद्वदल
 वामं किना गायाम वज्ररुद्राद्यादिनां दाक्षिण्यं वदन् व
 मंदव्यालिनिनां वाकां वा विजं रा वयन् १२ ॥ ततः ४
 वरु १ १ ॥

अ नाग राजा
 दिनदलं गुरुकं वक्रं वरुं स्य के रुद्राद्यादिनां तं का व बीज
 दाक्षिण्यं इत्युद सं वा मंद व्या लिनि त व म् १३ ॥ ततः ४ यद्वि
 मंदलं क कोट क ना ग राजा रुद्रा व र्धन स्य रुद्राद्यादिनां कं का व
 बीजं दाक्षिण्यं वलिनि वामं द व्या लिनि त र्मु ये वेत् १४ ॥ ततः ४ रुद्र
 दलं यम ना ग राजा धूम व र्धन रुद्राद्यादिनां यं का व बीजं दाक्षिण्यं

रायं वामदयालिनिर्गता वयन ॥ १ ॥ गता विदिम गदल ॥ ० ॥ अल
 यदल हल हल नागनाजा कर्षु वर्धु मकरुना । द्योदिर्ग हंकाववी
 जी दक्षिण कवयधनं वामदयालिनिर्गता वयन ॥ ५ ॥ निमल दल मरु
 यर्धनागनाजा गीगवक वर्धु गथादमरुना द्योदिर्ग ॥ दक्षिण क
 धनं वामदि दयालिनिर्गता यंकाववी जीरावयन ॥ १२ ॥ वायु दल

काली कनागनाजा विष्णु वर्धु गथादमरुना द्योदिर्ग दक्षिण कलां क
 लधनं वामदयालिनिर्गता कंकाववी जीरावयन ॥ ३ ॥ निमल दल मरु
 यात्रनागनाजा धिस वर्धु नवरुना द्योदिर्ग दक्षिण माधोखनधनं वाम
 वामदयालिनिर्गता कंकाववी जीरावयन ॥ ४ ॥ नमधम कलाष्ट क
 लनागनाजा स्थावनीया ॥ ० ॥ पून ४ वोक्षयनिवारुचयनागनाजा

निगमन

वार्क ॥ ० ॥ पूर्वद्वारा प्रमथादि कृदिकार्या ॥ गङ्गा ननाग राजा कृष्ण ॥ म ॥ च
 दय रत्नाग राजा मुकु ॥ १ ॥ वृक्ष नाग राजा यिग ॥ २ ॥ द ॥ सस्य परनाग
 राजा नर्क ॥ वा ॥ सतवा वरु नाग राजा म्मम ॥ ३ ॥ वा ॥ द ॥ क्रवदा नाग ॥ ४ ॥
 म्मयानिका कार्या ॥ ५ ॥ म्मचिदेली नाग राजा यीग ॥ ६ ॥ म ॥ म्मथियरु
 नाग राजा कृष्ण ॥ ७ ॥ द ॥ वृन्द नाग राजा स्वर्ग ॥ ८ ॥ द ॥ वषनाग न

जा नर्क ॥ ९ ॥ वा ॥ स्त्रोटदा नाग राजा म्मम ॥ वा ॥ यामिमदा नाग युति
 कार्या ॥ मथ ॥ गम्ग नाग राजा नर्क ॥ म ॥ सिन्धु नाग राजा कृष्ण ॥ १० ॥ द ॥
 अमन नाग राजा म्मम ॥ ११ ॥ द ॥ चक्र नाग राजा यीग ॥ १२ ॥ वा ॥ मीता नाग
 राजा म्मम ॥ वा ॥ उरु नदा नाग मथ्यादि कृदिकार्या ॥ अनिन नाग राजा
 जा म्मम ॥ म ॥ अनन नाग राजा कृष्ण ॥ १३ ॥ द ॥ अनवतक नाग राजा
 दिन

नागनागा विंश ॥ हं मिलि हौं उष्ण पा उं अका म दवालय वासुकि ॥ हिं
 कर्षी च्छात्रय प्रल्ह लोनी तदा गज तनालिका मूपन दीपनं च कपावा ई
 चक्र द्य ॥ श्री गसी लानि मरु मखपात्र ॥ हं नासा ॥ म गलेना ई धरु ककटिक १३
 हं मुख ॥ द्विपन द्विपन पद स वास वम ॥ कक ॥ उं ककनी या पूष्ण न सर्व नम
 लो हं कक ॥ हं हृदय ॥ पद्म नाग म ली काये लाज ल ॥ ही ना लो म स स म ग ली म

रुना लो म दा य म्ने ॥ म ना ज ख द्वा ॥ लो गु अ कू या द क वा या कू लिक ॥
 ॥ रुया द या ॥ पू राल वा म्मु ना ज ॥ हं मी वा या म म म्मु व न लो वना
 वा ॥ सा मा न्य ना नि व व सा ला मा न्य ना ग म्मु व य नू ॥ य य ना म ॥ ०
 ॥ ग ना जा य ॥ ॥ उं अं ॥ वं व म्मु द हं रु ट् स्वा हा ॥ म म्मु ॥ य य ना म ॥
 ॥ ग ना जा य ॥ ॥ ॥ ग ना वा लि लो वना ॥ यं काल द वा य म्मु ल ॥
 पू व न व ॥ दि इय

मलवपयविष्मधनैककावद्यसूर्यसुसूर्यवाभिनायविगीर्तनी
वैकावद्यसुदायनसंयुक्तालिगं श्रीकावद्यसुवर्धसिदिताजन
सर्गदत्तकराजनसुगतावर्कलयानियर्धयवैभ्रमगयचक्रनत्रयचक्र
लयादयनागच्छनाषधययुगवल्लिस्तवयग ॥ इति श्रीवैष्णववाधय
वयग ॥ इति वैकावनायमद्युलकस्याव्यारुकाजननकनामनादय

१४

यद्यमद्युलमध्याह्नकावयविधगनामसमूल्यन
लमध्याह्नययुज्यग ॥ ० ॥ गवलियुधनाम ॥ इति ननायस्वाहा ॥
इति वासुकायस्वाहा ॥ इति तदुकायस्वाहा ॥ इति कर्काटिकायस्वाहा ॥
इति मेषपात्रायस्वाहा ॥ इति कुल्लिकायस्वाहा ॥ इति दवकयस्वाहा ॥ इति
महादवकयस्वाहा ॥ इति सामामिद्वयस्वाहा ॥ इति माहासामिद्वय

स्वाहा गड्डं दधुधराय स्वाहा गड्डं महादधुधराय स्वाहा गड्डं जूयनाल
 स्वाहा गड्डं हलहलधुधराय स्वाहा गड्डं मोदोदराय स्वाहा गड्डं येनाय स्वा
 हा गड्डं महानयनाय स्वाहा गड्डं गीकानय स्वाहा गड्डं महाकानय स्वाहा
 गड्डं नलकानय स्वाहा गड्डं नन्दाय नन्दाय स्वाहा गड्डं नन्दाय स्वाहा गड्डं
 महादराय स्वाहा गड्डं जियिनय स्वाहा गड्डं सामानिकय स्वाहा ० ॥ ला

[illegible]

हजिना गसना दित माक

भस्त्रेन ॥ ० ॥ रावना ॥ तताम ॥ टितिवर्कां वयवितर्कं नानावल्गम
 यंकलनं ॥ आकाशजं मुकुटं धर्मादयास्यं विराद्य ॥ गदनस्य सखी
 ऊचीकृतं यन्निधममलं सख्यदवतामिचिचि ॥ सुदृष्टी जसयुषा
 मस्तानसखमायपूजता दृष्ट्वा ततः समययुवभ्यं महाताण्डुद्वी
 सख्यवाधिचिरुन्यामिति रूपां चिन्तयत् ॥ आयाय ॥ ॐ नमः

१६

१

नमो २ ॐ संखंदलं हूं ॥ सख्यनं सखा १

लमयुजनं ॥ ० ॥ तता जलाग्निस्त्रायनं ॥ देवजसख आ ४ ॥ २१ ॥ ज
 लयागुसधयुषा क्रियत् ॥ ॐ ममादाकृ भदि द्यापविश वसुदवता
 पूर्वधर्मासद्यत्रता ४ यथाधी जातदत्रागता ४ सर्वविद्युभर्नि कर्तु स्वाह
 ॥ कृमदलसुनधमकु ॥ कसयुटानीकं कृमयाकतिर्गदुत्वा वाक्कागिद
 नषूस्त्राययादियुष्य न्यास ॥ जलयागुभधर्न ॥ तता जलदवतागिरावन

॥ गतामघघनमालखडं ॥ गतकुलमध्यानिष्कावयत् राधर्माद्रुयाद्रुव
सुवकुलकृष्णमध्यावस्थाद्रुवाभिरिष्टनियमं वावृक्ष्य कालान्कलं वनून
मधुलक्ष्मिपुत्ररावन्प्रावकाग्निमस्तत्प्रवर्गभीकालं ज्ञानं । नित्यं
पवववर्द्धकटाकलायं यस्तु पवित्तिगवतस्तु विरुताधितानि सव्याहयं
यनीमाधुतदस्मयुग्मं । वामाग्निमावदधुकमवर्द्ध ॥ इदं वावकाग्नः

၇၈

ॐ श्रीनिबं जनमृषेयाय पं. ला. च. सुनि। धनं नाले विद्युता नाके रु॥ १॥ धनं धरा जया ज दन क्रिया य विधि था
य स्वादा मनुक दिमदा रागदवा वि द्विज सरुम ग लाहति मदा वा मिस
निदिगा र व स्वादा ॥ श्री. नि. या. य. ॥ य निष्ठा डल द व ना इ न्या हू नि
य मार ग कल मारि य क ग ग रा द य य कल सै र्हा ॥ डं श्री ४ दं ॥ य ध मी
या दि द य स्य धनं ग ग ना श्री नि मू वं नू का य ध य व रु ल य मा धं म
कु र्ज र स मि रा य य ॥ डं श्री ल न य स्व दा ग द न ॥ डं श्री य नि द न व डं
व लि सै र्हा व न य

॥ नमो भगवते ॥

हाम

स्वाहा ॥ हाम कस ॥ इँ अम न न नाय स्वाहा ॥ स्वत इ चो क धु ॥ इँ वाधि
 व क्षाय स्वाहा ॥ यं च य न ड क्षा व ह क्षा दि ॥ इँ सर्व या प द ह न व ड
 य सर्व या प द ह स्वाहा ॥ ल्व ग नि ॥ इँ व ड य य स्वाहा ॥ **आ कृ**
 इँ व ड य ग य स्वाहा ॥ त ह ॥ इँ व ड वि क्षाय स्वाहा ॥ खान वा ॥
 इँ व ड ना ड य स्वाहा ॥ खौ न ड ॥ इँ सर्व सं य न य स्वाहा ॥ म ह ला दि
 ना य ॥

१८

इँ खं स लं म द नी व डी रु व व ड वं ड हं ॥ थ न ड व वा हा न न व ड द म् ॥ अ हा व न या य
 ड अ ल्नी य न न स्वाहा ॥ उ गु क व ड य य य य य अ म न ॥ म न व ड हा न
 र्य ॥ अ ह नि ॥ इँ अ ४ हं स्वाहा ॥ स र व ह वा ॥ म र्व इ ह या त ॥
 ज क्षा ना मि का र्था णि दि चो म र्व न इ च इ चो क धु स दि न न ड ल
 स्त ना ह नि च ड का न य न ॥ य थ मी ह नि ॥ त ना ड ल व ड वा च म न
 का न य न ॥ लो का रु व स्त ना मि वि रा य ॥ ड लो ल्म य ड ल्म

का व १
 अ न म उ त या य ॥ अ न या य ॥ व डी
 अ न म उ त या य ॥ अ न या य ॥ व डी

अ न म उ त या य ॥ अ न या य ॥ व डी
 अ न म उ त या य ॥ अ न या य ॥ व डी

अ न म उ त या य ॥ अ न या य ॥ व डी
 अ न म उ त या य ॥ अ न या य ॥ व डी

हृदिकमलचक्षुःसनायविमलकुलाधियगिनीजीनिधनचिद्रवीजय
 विधममनमधुलाधियगिसमामैधुलयविहावा ॥ अतस्तत्त्वचक्षुः
 मिवसमसीदुत्वनसहकीरुख ॥ आ. या. यू. ॥ ततोऽलदवगाम ॥ १२
 खड्गकावहाकेभुवजयवहलयमानविहावा ॥ अमधुलमकुनश
 हयानूयूववत् ॥ अं ४ ववधनागवोहायहृत्वाहा ॥ अलदवगाम

ति ॥ आ. या. यू. ॥ ततोऽदमक्रियायगिष्ठाः अल्पगिष्ठासधुलाग्निप्रियद
 क्रिष्टं कृतवान् ॥ याजकाः सिल्वगगिल्लं अहृत्वा ॥ नागयागगात्र
 तयाय ॥ सात्रिकः तदुत्तरायुहामत्रयत्रकश्चिः सोषत्रद्वयवाक
 साइइ ॥ पूरणीयवीश्ववासहस्रयुगास्तिविकल्प ॥ पञ्चमहाबलि
 आरुमन ॥ यष्टुहृतिः पञ्चवाहात्रयुगाः शोलाभ्यध्ववादि

धूमिगवसत्याडा नोकेकागविय

नमो नमिः कृमाय यैवा गुननिश्चातनः दक्षिणदिक् च त्वा यत्र साभिवा
 दक्षदत्वा गच्छेयमिह गिमधुला गिमसदा य ॥ स्वस्वस्थानान्कमनघ
 विवात्रता गकृद्युष्टो कयन् ॥ मूलकृद्युल्लससाधकं स्थानसमय
 यन् ॥ जलजा गिमजललुप्तसाधनजलस्थ नया क्रियार्ह दीक्षम
 लसमर्थयन् ॥ विष्णुर्जनतिः कृमात्रो यज्जयन् ॥ विष्णुर्ज

२०

नमत्रकः गनचक्रं च कात्रयन् ॥ यविष्णुमनाष्टा निकमहावलिविष्ण
 ननध्रुमा गिमलिसयजितं ह्यमविस्त्रयन् ॥ गदात्रमनीकृत्वा मश्वस्य
 धनं गदीत्वा दानुसंसायथि स्वस्वरावर्तं विजहात्र ॥ ० ॥ ॐ निसिद्धि
 संगदविष्मनर्कनजलजा गद्ययुजा विधिसमार्य ॥ ० ॥ गुरु ॥ ०
 रना गायामुनि ॥ वतिसना गः वनमधुलः नमकनूर्यं वल्लयरावज

वयस्य ऊ नागयन्तं ॥ सत्रतदा ग क व यू थ य नि च क य रू मि यि ति ॥
स्ति ग रू नि व यू धी न मा मि रू ॥ व लि मा ला ॥ उ व ज व न ना य आ
ग रु ग रु पी रु व त म धु ल स र्व स त्वा ना ग मा नि यू रू क न रू क ॥ २१
ज ल ॥ रू धि धा रं य न य रू क न रू त

धमरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाविहार

II-115